रात्रीक्लास ओमशान्ति शिवबाबा याद है? 30-1-86

जिन में दैवीगुण होते हैं उन से सब को प्रिय होती है। गुण ही जिसमें नहीं हैं तो उन से प्रिय क्या करेंगे। प्रिय भी समझ कर रखी जाती है। अपने से पूछना चाहिए हम कितना समय सर्विस करता हूं। नहीं तो बहुत2 बोझा चढ़ेगा। 2। जन्म लिए सर्वेन्ट ही बनूंगा। सर्विस ही नहीं करता हूं तो बाप क्या देंगे। काम करने वालों के आगे भड़ी ढोंढेंगे। कोई में अवगुण हैं तो समझा जाता है इन में कोई भी गुण नहीं हैं। ऐसे भी हैं। ऐसे का संग भी खराब है। यहां तो बच्चों को पुरुषार्थ करना है। मैनर्स भी देखी जाती हैं। सब को सुख देने वाला जरूर सब को प्यारा लगेगा। क्रोध करने वाले से किनारा कर देना चाहिए। भूत आया भाग जाओ। भूत के आगे बोलना न चाहिए। परन्तु देखा जाता है बात करने लग पड़ते हैं। तो सब में भूत आ जाता है। रिपोर्ट तो बाबा पास आती है ना। समझाना होता है यह भूत न आना चाहिए। इससे बात न करना अच्छा है। लोभ भी होना न चाहिए। तुम सब वानप्रस्ती हो ना। वाणी से परे जाने वाले। पापात्मा तो जा न सके। विकर्मों का बोझा है ना। याद रहे तो कुछ विकर्म भी कम हो। क्रोध आद है तो समझा जाता है यह याद करते नहीं हैं। बाप कुछ काम कहे और न करे तो सोना डन्ड पड़ जाता है। नाफरमानबरदार का कलंक लग जाता है। ईश्वर का नाफरमानबरदार। इसलिए बाबा कबभ्रम कहते भी नहीं हैं। बच्चों को समझ होनी चाहिए। अभी तो बेहद के बाप से जितना हो सके सदा सुख का वर्सा ले लेवें। अच्छे2 बच्चों को फर्ज करना चाहिए। किसको दुःख न देना चाहिए। बच्चे तो समझते हैं ड्रामा है। राजधानी स्थापन होने को है। टीचर को नफरत क्यों आवेगी। समझेंगे ही नहीं तो नाम-बदनाम होगा। बहुत नापास होंगे तो लिफ्ट नहीं मिलेगा। यह तो बाप समझते हैं कल्प पहले जो स्पष्ट हुई थी वह होगा। राम को भी नापास रखते हैं ना। युध के मैदान में नापास हुआ तो फिर त्रेता में आ गया। तो भी अच्छी मेहनत का होगा। पुरुषार्थ कर अभी तो पद पावेंगे वह कल्प-कल्पान्तर पाते रहेंगे। बच्चों को सब सा० होगा। कोशिश कर अपना कल्याण करना चाहिए। सर्विस कर बाप दादा के दिल पर चढ़ना चाहिए। दिल पर चढ़ना अच्छा है। रावणराज्य है तब तो रावण को जलाते हैं। रावणराज्य में रावण सम्प्रदाय यथा राजा रानी.... यह बहुत सहज है। गुसा नहीं लगेगा। रामराज्य में हो तो देवी देवता। रावण राज्य में असुर हो। रावण को जलाते हो नहीं मरता है। तो हु ना। अब पावन बन पावन दुनिया का मालिक बनना है। अभी रावणराज्य में सब बेसमझ हैं। रामराज्य में होते हैं समझदार। अभी तो पत्थर बुधि हैं। पारस बुधि बनने पुरुषार्थ कर रहे हैं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करो तो पाप का बोझा सर से हल्का हो जावेगा। बाप को याद करने से ही पुण्यात्मा बन सकते हैं। सब से जरूरी कल्याण याद में बैठने में है। बाप शान्ति का सागर है, सुख का सागर है। उन से ही वर्सा लेना है। चलते-फिरते बाप को याद करो। फिर दैवीगुण भी धारण करनी है। बाप को याद करना है। कोई को दुःख नहीं देना है। कड़वा नहीं बोलना है। ओम। पाईन्ट:- तुम बच्चे जानते हो वहां स्वर्ग में तो हीरे जवाहर सोने आद के महल होंगे। सो फिर जरूर रिपीट
****
होगा। फिर वही मंदिर आद बनावेंगे। कितना भारत शाहुकार था। ऐसे भारत के तुम मालिक बन रहे हो। विश्व के मालिक बनते हो। बाप खुद तो विश्व के मालिक बनते नहीं। तुम ही विश्व के मालिक थे। फिर 84 जन्म लेते2 तमोप्रधान बने हो। बाप कहते हैं मैं आकर सभी का उधार कर्ज करता हूं। यहां विकार की बात नहीं। रावण राज्य नहीं। बाप कितनी मीठी2 पाईन्ट सुनाते हैं। यहां से बाहर गये फिर उल्लू के उल्लू बन जाते हैं। भक्ति मार्ग है ही उल्टा मार्ग। ज्ञान मार्ग है सुल्टा। भक्ति मार्ग में टांगें ऊपर सर नीचे करते हैं। ज्ञान मार्ग में तो सिर ऊपर होता है टांग नीचे। उल्लू उल्टा लटकते हैं ना। मनुष्य सभी उल्टा लटके हुए हैं। अभी बाप तुमको सुल्टा बनाते हैं। -बच्चों को पुरुषार्थ करना है। बाकी बाबा से कोई से दो लाख लेकर क्या करेंगे। कहेंगे जाकर म्युजियम खोलो। मकान तो खत्म हो जावेंगे। बाबा तो व्यापारी है ना। सराफ भी है। दुःख के जंजीरों से छुड़ाके सुख देनेवाला है। अभी बाकी थोड़ी रही है बहुत हंगामा होने का है। ओम=शान्ति=ओम ओम।